हिन्दी की प्रगति : समस्याएं एवं समाधान

हिन्दी हैं हम वतन है हिन्दोस्तां हमारा। हिन्दी हमारी राजभाषा एवं मातृ भाषा है परन्तु हमारा अपनी भाषा के प्रति इतना प्रेम है कि हमें इसकी प्रगति में समस्यायें एवं समाधान पर आज भी, देश की आजादी के छियालीस वर्षों के बाद भी विचार करना पड़ रहा है।

भाषा किसी भी समाज की एक अमूल्य प्राप्ति होती है, प्रकृति की एक नैसर्गिक उपलब्धि है तथा देश की, समाज की, संस्कृति को परिलक्षित करने का एक माध्यम होती है। एक विशाल भू भाग की राजभाषा एवं राष्ट्रभाषा के पद पर सुशोभित होने के कारण हिन्दी की आवश्यकतायें वैसे ही बहुत हैं परन्तु भारत वर्ष जैसा बहुभाषी राष्ट्र होने के नाते हिन्दी की आवश्यकतायें और भी बढ़ जाती हैं। सैकड़ों वर्षों पूर्व हिन्दी देश की राष्ट्र भाषा रही है। अंग्रेजों से भी पूर्व राजपूत, मराठा इत्यादि शासन कालों में हिन्दी का सूर्य चमकता रहा। राजपूत शासन काल में पृथ्वी राज चौहान के राज में कवि चन्द्रबरदाई ने हिन्दी भाषा में अनेक रचनायें रची। मराठा शासकों में पेशवा, होल्कर इत्यादि शासक वंशों ने भी हिन्दी को गरिमा प्रदान की। ईस्ट इन्डिया कम्पनी के भारत में प्रवेश पर भी हिन्दी ही सम्पर्क भाषा रही। परन्तु लार्ड मैकाले की शिक्षा नीति परिवर्तन द्वारा अंग्रेजी का प्रार्दुभाव हुआ तथा अंग्रेजी ही सम्पर्क की भाषा बन गई। इसके उपरान्त स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात हिन्दी को राजभाषा का गरिमामय स्थान प्रदान किया गया, परन्तु संविधान की विचित्र सीमाओं में बांध कर अंग्रेजी को सम्पर्क भाषा का स्वरूप दिया गया। इसके बाद की स्थिति आज तक स्पष्ट है कि हिन्दी हमारे बीच कहां है। वर्तमान में हमारे बीच में हमारी मातृभाषा का अस्तित्व कहाँ खो गया है पता ही नहीं चलता। अंग्रेज तो हमें छोड़ कर चले गये लेकिन उनकी अंग्रेजी छोड़कर नहीं गई। आज हिन्दी को दो तरफ से अपने अस्तित्व की रक्षा करनी पड़ रही है, एक तो अंग्रेजी के वर्चस्व से तथा दूसरी विभिन्न क्षेत्रीय भाषाओं से।

एक सरल सुबोध जन सम्पर्क की भाषा हिन्दी जिसमें अभिव्यक्ति की सहजता अन्य भाषाओं से कहीं ज्यादा है आज अपने होने का अहसास मात्र हिन्दी दिवसों या सप्ताहों द्वारा कराती है। हमें विचार करना होगा कि आखिर हिन्दी भाषा की प्रगति में क्या-क्या समस्यायें हैं?

हिन्दी भाषा की प्रगति में सर्वप्रथम प्रमुख समस्या है सरकारी नीति का कार्यान्वयन न होना। देश की राज भाषा बनाये जाने के बावजूद भी आज देश का अधिकांश सरकारी कार्य अंग्रेजी भाषा में ही होता है। उच्च पदों पर आसीन व्यक्ति अपना अधिकांश कार्य हिन्दी में नहीं करते। सरकारी अध्यादेश के बावजूद उसकी खुली अवहेलना होती है। राष्ट्रपति व प्रधानमंत्री तक हिन्दी का अच्छा ज्ञान होने के बावजूद भी उसका प्रयोग न करें तो भाषा की प्रगति क्या होगी?

राष्ट्रीय भावना की कमी - हमारे स्वयं में इस बात की कमी है कि हम स्वयं अपनी राजभाषा का प्रयोग करें। स्वयं को हम एक विशिष्ट स्तर का प्रतीक तभी समझते हैं जब हम अंग्रेजी भाषा का प्रयोग करते हैं। हम स्वयं ही हिन्दी को सम्पर्क भाषा बनाने का प्रयास नहीं करते बल्कि अंग्रेजी भाषा का प्रयोग करना एक प्रतिष्ठा का प्रतीक समझते हैं।

सुभाष किचलू, वरिष्ठ शोध सहायक

गलत शिक्षा नीति - हिन्दी की प्रगति में सबसे बड़ी बाधा हमारी शिक्षा नीति है। आज विद्यालय में प्रवेश के समय ही 'जानी जानी यस पापा' सीखना अनिवार्य बन गया है। देश में बारहवीं कक्षा तक तो हिन्दी में किसी तरह पढ़ाई उपलब्ध है परन्तु उसके बाद उच्च इंजीनियरिंग, डाक्टरी व अन्य विशिष्ट अध्ययनों हेतु अंग्रेजी का ही माध्यम मुख्यत: उपलब्ध है। यदि कोई छात्र हिन्दी माध्यम से पढ़ता भी है तो या तो उपहास का पात्र बनता है या फिर दौड़ में पीछे रह जाता है। अत: भविष्य की अनिवार्यता देखते हुये माता पिता शुरू से ही मातृभाषा के माध्यम से शिक्षा नहीं दिलवाते। तकनीकी ज्ञान व तकनीकी शब्दों की भी हिन्दी भाषा में कमी है, यह कुछ हद तक सत्य भी है। हमने प्रयास ही नहीं किया व अंग्रेजी भाषा के शब्दों के ज्ञान को वैसे का वैसा ही आत्म सात कर लिया है।

प्रयास का अभाव - सबसे महत्व पूर्ण विषय है कि हम प्रयास ही नहीं करते। हम स्वयं में इस बात की हिम्मत नहीं जुटा पाते कि हम हिन्दी में कार्य करें। आवेदन पत्र लेखन, हस्ताक्षर, पत्र लेखन इत्यादि छोटे-छोटे कार्य भी अंग्रेजी में ही करते हैं। भले ही पत्र हिन्दी में लिखें लेकिन लिफाफे पर पता अंग्रेजी में ही लिखते हैं व गर्व महसूस करते हैं। हम यह देखते हैं कि उसे देखकर हमें कोई क्या कहेगा? स्वयं की उस कमी का समाज को दोष देते हैं जिस का स्वर हम पहचानने की कोशिश नहीं करते।

राजनैतिक कारण - कुछ हद तक यह भी सत्य है कि हिन्दी की वर्तमान दुर्दशा के लिये देश की गन्दी राजनीति भी जिम्मेदार है। दक्षिण भारतीय राज्यों को देखें तो हिन्दी का विरोध मात्र राजनैतिक स्थिरता के लिये ही किया जा रहा है जबकि सत्य है कि यदि दक्षिण भारत का व्यक्ति उत्तर भारत में हो तो बात हिन्दी में ही करता है। इसके अतिरिक्त हमारे देश के संविधान द्वारा भी इस बात को बांध कर सीमाओं में कर दिया गया है कि किन परिस्थितियों में और कब हिन्दी सम्पूर्ण देश की राज भाषा बनेगी।

इन सभी बातों के बावजूद भी आज हिन्दी विद्यमान है, हिन्दी जी रही है, धीमी ही सही सांस तो ले रही है। आवश्यकता है प्रयासों की जिनके द्वारा हिन्दी के स्वरूप को सुधारा जा सकता है। समस्याओं के समाधान भी उन्हीं के द्वारा जनित होते हैं जो निम्न प्रकार हैं:-

सरकारी प्रयासों की आवश्यकता - हिन्दी को उचित स्थान दिलवाने में सरकार की ओर से ठोस व महत्वपूर्ण कदम उठाने की आवश्यकता है उच्च स्तर से ही प्रयास करने होंगे। सरकारी नीति में परिवर्तन करके हिन्दी को देश की राजभाषा पूर्णत: घोषित कर दिया जाय। सरकार के बड़े नेताओं, उच्च पदों पर आसीन व्यक्ति स्वयं ही सभी कार्य हिन्दी में करना आरंभ कर दें। आवश्यकता क्या है अंग्रेजी में कार्य करने की जब हमारा अपना माध्यम उपलब्ध है।

देश की शिक्षा नीति में आमूल परिवर्तन की आवश्यकता है। देश की शिक्षा के माध्यम को प्रारम्भ से हिन्दी से जोड़ा जाना चाहिये। उच्च शिक्षा का माध्यम हिन्दी किया जाना चाहिये एवं नौकरी हेतु भी अंग्रेजी की अनिवार्यता को समाप्त कर देना चाहिये। हिन्दी के ज्ञान को आवश्यक व अंग्रेजी के ज्ञान को अतिरिक्त घोषित करना चाहिये। हमारे देश में एक बैंक के क्लर्क को भी अंग्रेजी का ज्ञान आवश्यक है जबकि रूस व जापान के वैज्ञानिक बिना अंग्रेजी जाने ही अंतरिक्ष की सैर कर आते हैं।

स्वयं के प्रयास की आवश्यकता - सबसे महत्वपूर्ण आवश्यकता स्वयं से शुरूआत करने की है। हमें शर्म छोड़नी होगी। हम यदि गर्व से हिन्दी का प्रयोग आरम्भ करें तो किसी अन्य समाधान की आवश्यकता ही नहीं है, हिन्दी के प्रयोग को आत्मसम्मान का स्वरूप समझना चाहिये।

तकनीकी व वैज्ञानिक क्षेत्र में नयी आवश्यकतायें - तकनीकी व वैज्ञानिक क्षेत्र में हिन्दी के नये आयाम खोलने के प्रयास करने चाहिये। कुछ हद तक सत्य है कि इस क्षेत्र में हिन्दी शब्दकोष कम हैं परन्तु फिर भी गलती हमारी

है। वर्तमान समय में अनुवाद करने की मशीन तक उपलब्ध है जिसमें कि अन्य भाषा का प्रपत्र डालते ही इच्छित भाषा में अनुवादित हो जाते हैं। हिन्दी में संगणक तक उपलब्ध हैं। बात फिर हमारे प्रयास की आती है।

अपनी भाषा को हमें ही वह स्थान दिलाना है जिससे कि आने वाले वर्षों में हमें इस प्रकार के सप्ताहों का आयोजन न करना पड़े अन्यथा आने वाली पीढ़ी हमें माफ नहीं करेगी। स्वयं का ही प्रयास समुचित है जो सबसे बड़ा समाधान है।

आशा है वह दिन अवश्य आयेगा जब हिन्दी केवल हमारी राजभाषा, मातृ भाषा व राष्ट्र भाषा का पर्याय होगी। हमें गर्व का अनुभव होगा।

विचित्र किन्तु सत्य !

- तिब्बत में मेहमानों का सम्मान उनकी ओर जीभ निकालकर किया जाता है, जिसे हम जीभ चिढ़ाना कहते हैं।

- प्राचीन रोम में नमक इतना कीमती तथा दुर्लभ था कि जूलियस सीज़र अपनी सेना को वेतन के रूप में मुद्रा न देकर केवल नमक देता था। अंग्रेजी में वेतन के लिये प्रसिद्व शब्द 'सैलरी' लतीनी भाषा के शब्द 'सैल' से बना है, जिसका अर्थ होता है - नमक ।

- यह घटना 21 फरवरी 1816 की है। व्हेल पकड़ने वाली नाव विनसलॉ का मालिक कैप्टन एडमंड गार्डनर पेरू के निकट समुद्र में नाव के एक किनारे पर खड़ा था। तभी उसके भाले से बेधित एक दैत्याकार व्हेल ने कैप्टन सहित नाव के किनारे को अपने दांतों से दबोचकर तोड़कर निगल लिया। कैप्टन किसी तरह बच निकला पर उसकी खोपड़ी में दरार थी, कॉलर हड्डी भी टूट चुकी थी और एक हाथ का कचूमर हो गया था। बाद में स्वस्थ होकर वह 59 वर्ष जीवित रहा।

- एक शासक, जिसके पास वस्त्रों का सबसे बडा भंडार था - वह था हैदराबाद का छठवां निजाम और भारत का सबसे धनी शहजादां मीर महबूब अली खां (1856 - 1911) उसने अपने जीवन में एक वस्त्र कभी दूसरी बार नहीं पहना। बेशकीमत, सफेद, बारीक मलमल से बने कपड़े एक बार इस्तेमाल करने के बाद महल के नौकरों को दे दिये जाते थे।